Hons. Part I & III

PHILOSOPHY

Hons. Paper-I (Part-I) & Paper-VIII (Part-III)

Dr. S.K. Singh
Mob-9431449951

माया सिद्धांत (शंकराचार्य)

→ शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त को अर्धश्लोक में इस प्रकार व्यक्त किया गया है — 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः' अर्थात ब्रह्म ही सत् है, जगत मिथ्या है और ब्रह्म एवं जीव में तादात्म्य है। इस प्रकार ब्रह्म ही एकमात्र सत् है, यह अद्वैत सत्ता है।

→ शंकराचार्य के अनुसार पारमार्थिक रूप से एकमात्र ब्रह्म ही सत् है, अतः ब्रह्म से भिन्न, पृथक किसी अन्य की वास्तविक सत्ता नहीं है। दूसरी ओर व्यावहारिक दृष्टिकोण से सांसारिक जीव एवं नाना प्रकार के पदार्थ दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में यह द्वन्द्व सामने आता है कि एकमात्र ब्रह्म तथा अनेक जीव और जगत की प्रपंचमय स्थिति के बीच सामंजस्य कैसे स्थापित किया जाय। शंकराचार्य इसकी व्याख्या और सामंजस्य माया के आधार पर करते हैं।

→ माया के दो कार्य हैं, जिसे हम उसकी शक्ति के रूप में देखते हैं — (i) आवरण और विक्षेप।

आवरण माया का नकारात्मक पक्ष है जो वास्तविकता को छिपाता है और विक्षेप सकारात्मक पहलू है जो अध्यारोपण करता है।

~~इस प्रकार~~ माया के वस्तुतः दो पक्ष हैं। अपने नकारात्मक पक्ष में यह ब्रह्म पर आवरण है, उसे छिपाती है। अपने सकारात्मक पक्ष में यह ब्रह्म का विक्षेप है, ब्रह्म पर अनेकान्तिक जगत का अध्यारोपण है।

स्पष्ट है कि माया के कारण ही ब्रह्म (आत्मा) की पारमार्थिक सत्ता के स्थान पर जगत-प्रपंच एवं जीवों की विविधता दिखाई देती है।

→ इस प्रकार माया शंकराचार्य के दर्शन की तार्किक कुंजी है जिसके माध्यम से विरोधाभासी स्थितियों की व्याख्या और उनके मध्य सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

→ शंकराचार्य माया को न तो रामानुज की भाँति ईश्वर की वास्तविक सृष्टि करने की शक्ति मानते हैं और न ही वे

Scanned with CamScanner

इसे ब्रह्म के लिए स्वरूप के रूप में स्वीकार करते हैं।

→ ~~इस प्रकार कहा जा सकता है कि जो~~ वस्तुतः पारमार्थिक दृष्टिकोण से जो नहीं है, वही माया है। माया वह है जो ब्रह्म को परिमित (वास्तविक रूप से सीमित नहीं) जगत के रूप में बोध कराती है।

→ इस प्रकार मायावाद प्रत्ययवाद और यथार्थवाद दोनों से परे है। इसके अनुसार विषयता वास्तविक होते हुए भी पारमार्थिक नहीं है, परमार्थतः वह औपाधिक है। इसलिये जितने भी विषय हैं, वे सभी माया हैं।

तुलसीदास ने इस तथ्य को अच्छी तरह से अभिव्यक्त किया है - 'गो गोचर जहँ लगि मन जाई, सो सब जानेहु माया भाई', अर्थात् इन्द्रिय और मन जहाँ तक जाते हैं, वे जिन विषयों को पकड़ते हैं- वे सभी माया हैं। वस्तुतः यह माया-सिद्धांत भी अन्ततः माया ही है जो अद्वैत ब्रह्म ~~ब्र~~ को विषयी-विषय (द्वैत) के रूप में प्रस्तुत करने की व्याख्या करता है।

⇒ संक्षेप में माया की विशेषता -

- → माया अनादि है।
- → माया भावरूप है (अभावपक्ष-आवरण, भावपक्ष-विक्षेप)
- → माया सदसदनिर्वचनीय (सद् + असद् + अनिर्वचनीय) या भावाभाव विलक्षण (भाव + अभाव + विलक्षण) है।
- → माया अध्यास है।
- → माया ज्ञान-निरस्या है।
- → माया विवर्त है।
- → माया ब्रह्म की अभिन्न शक्ति है।
- → माया का आश्रय और विषय ब्रह्म है।
- → माया-सिद्धांत भी अन्ततः माया है जो अद्वैत सत्ता (ब्रह्म) को नानारूपात्मक जगत के रूप में प्रतीत कराता है।

Scanned with CamScanner